



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 217]

नई दिल्ली, रविवार, दिसम्बर 25, 1994/पौष 4, 1916

No. 217] NEW DELHI, SUNDAY, DECEMBER 25, 1994/PAUSA 4, 1916

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 दिसम्बर, 1994

फा.स. 3/8/94-पब्लिक.—25 दिसम्बर, 1994
को जानी जैल सिंह के देहावसान से भारत ने एक ऐसे महान राजनीतिज्ञ एवं ससदविद् तथा स्वतंत्रता सेनानी और मानवतावादी को खो दिया है जिसने असौम निष्ठा, समर्पण और उत्कृष्टता के साथ देश की सेवा की।

2. लम्बे, सुन्दर और सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी जानी जैल सिंह का लोकनायक मूल्यों में दृढ़ विश्वास था। एकदम सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले और ईश्वर में गहरी आस्था रखने वाले जानी जी धरती मां के सच्चे सपुत थे। उन्होंने भारतीय जनमानस में अपने लिए एक विशिष्ट स्थान बना लिया था।

3. जानी जैल सिंह का जन्म 3 मई, 1916 को फरीदकोट जिले के ग्राम सांधवान में दम्नकारों के एक परिवार में हुआ था जिसने खेती के पेशे को अपना लिया था। वे एक अत्यन्त साधारण परिवार के व्यक्ति थे जिनका जन्म दरदराज के एक गांव में मिट्टी के एक कच्चे मकान में हुआ था। कपड़ों की सिलाई करते, पत्थर तोड़ते, खेतों में जुताई करने, सब्जियाँ बिक्री, कुएँ खोदने तथा तलवारें बनाने हुए जानी जी का ग्राम आशमी की मनोदशा, उसकी

समस्याओं और आकांक्षाओं को अनुभव करने एवं समझने का अवसर प्राप्त हुआ। आरम्भिक शिक्षा के तौर पर भी उन्होंने सिख धर्मग्रन्थों का गहन अध्ययन करने के अनिर्विकल कुरान, गीता और रामायण का अध्ययन भी किया।

4. बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए जानी जी ने अपनी साहित्यिक रुचियों का संवर्धन किया। जिस समय उनकी उम्र के बच्चों ने अपनी मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की, वे सिख धर्म, सिख इतिहास और सिख धर्म ग्रन्थों का अध्ययन पूरा कर चुके थे। बड़े होकर वे एक जानी बने जिसका तात्पर्य है विद्वान। हिन्दी और उर्दू में वे भलीभांति पारंगत थे। अंग्रेजी भाषा पर यद्यपि उनकी पकड़ उतनी अच्छी नहीं थी, किन्तु आत्म सहायता, धैर्य, कड़ी मेहनत और अडिग सत्यनिष्ठा की शक्ति का जो अनुकरणीय उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया वह इस दुकता का परिचायक है कि व्यक्ति किम तरह आत्मनिर्भर और आत्म-निर्भरता के बलवृत्ते पर मन्त्रों से निचले दर्जे से उठकर भी एक सम्मानपूर्ण आजीविका और ख्याति अर्जित कर सकता है।

5. शूरवीर स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह और उनके साथियों की 23 मार्च, 1931 को हुई शहादत ने बालक जानी, जो उस समय मात्र 16 वर्ष की आयु के थे, को हिलाकर रख दिया। फरीदकोट की गिरफ्तारी में 1938 में अखिल भारतीय कांग्रेस की शाखा की स्थापना के साथ ही

ज्ञानी जैल सिंह की अग्नि परीक्षा की दास्तान शुरू हुई । महाराजा ने कांग्रेस की शाखा खोलने को एक चुनौती और शाखा खोलने वाले को अपने कट्टर दुश्मन के रूप में लिया । यह ज्ञानी जी ही थे, जिन्होंने फरीदकोट रियासत में कांग्रेस की स्थापना की थी, अतएव उन्हें 5 वर्ष का कारावास भुगतना पड़ा । कारावास की इस पूरी अवधि के दौरान उन्हें एकांत में रखा गया था । रिहाई के बाद भी, ज्ञानी जी को तंग किया गया और उन्हें कुछ समय राज्य के बाहर बिताना पड़ा । उस अवधि के दौरान, उन्होंने अपनी रियासत में चल रहे स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति समर्थन जटाया । इसी दौरान वे गांधी जी के अहिंसा के संदेश से भी प्रभावित हुए ।

6. वर्ष 1946 में ज्ञानी जी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए संघर्ष की तर्ज पर स्वतंत्रता आन्दोलन पुनः शुरू करने के लिए अपनी रियासत में लौट गये । राष्ट्रीय ध्वज फहराने के प्रश्न पर समूची फरीदकोट रियासत एक जुट हो खड़ी हो उठी । लेकिन महाराजा ने आतंक का साम्राज्य फैला दिया । ज्ञानी जी और कुछ अपने ही साथियों से इस दमन चक्र की बात का पता लगने पर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने फरीदकोट जाने और तिरंगा फहराने का निर्णय किया । इससे ज्ञानी जी को पंडित जी के समीप आने का अवसर प्राप्त हुआ और उसके बाद पंडित जी की कृपा दृष्टि इस युवा और होनहार स्वतंत्रता सेनानी पर बनी रही ।

7. फरीदकोट में एक समानान्तर सरकार की स्थापना आजाद भारत के लिए ज्ञानी जैल सिंह के संघर्ष का सर्वाधिक संकटपूर्ण साहस कर्म था । ज्ञानी जैल सिंह को राजा की सरकार के खिलाफ विद्रोह की अगुवाई करने का दोषी ठहराया गया और उन्हें हिरासत में ले लिया गया । जब फरीदकोट रियासत का पटियाला की रियासत और पूर्वी पंजाब राज्य संघ में विलय हुआ तो ज्ञानी जैल सिंह ने राजस्व एवं कृषि मंत्री की हैसियत से खेतिहर मजदूरों, छोटे-छोटे काश्तकारों के लिए सामाजिक-आर्थिक न्याय की स्थापना के लिए ऐतिहासिक योगदान किया । वास्तविक काश्तकारों की मालिकाना हक दिलाने, दूर बसे जमींदारों से छुटकारा दिलाने और भूमि हवखंदी के पश्चात् फालतू बची जमीन पर काश्तकारों को काश्तकारी के अधिकारों की सुरक्षा दिलाने के लिए उठाए गए वैधानिक कदम सब ज्ञानी जी के प्रयासों का ही परिणाम थे ।

8. 1956 में, ज्ञानी जैल सिंह राज्य सभा के सदस्य तथा पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बने । 1962 में पंजाब विधान सभा के आम चुनावों तथा लोक सभा के लिए हुए चुनावों में कांग्रेस की भारी जीत सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने निस्वार्थ भाव से संघर्ष किया तथा स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरो के नेतृत्व वाली सरकार में उन्हें मंत्री बना दिया गया । 1962 से 1972 के दौरान,

ज्ञानी जैल सिंह ने पंजाब में साम्प्रदायिक, प्रतिक्रियावादी ताकतों तथा शोषण के विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया । पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष होते हुए, 1971 के लोकसभा चुनावों तथा 1972 के पंजाब विधान सभा चुनावों में कांग्रेस के लिए निर्णायक तथा भारी बहुमत प्राप्त करने में उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई ।

9. मार्च, 1972 में पंजाब कांग्रेस विधायक दल द्वारा एकमत से उन्हें पंजाब का मुख्य मंत्री चुना गया । मुख्य मंत्री के रूप में पांच वर्षों से भी अधिक का उनका कार्यकाल पंजाब के लिए स्थिरता का दौर रहा । ज्ञानी जैल सिंह ने राज्य में हरित क्रांति तथा उद्योगीकरण की गति को तेज किया तथा सभी धर्मों के लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देकर धर्म निरपेक्ष ताकतों को मजबूत किया । उनके गतिशील नेतृत्व में पंजाब में समृद्धि, स्थिरता, सजीवता, एकता तथा भाईचारे की भावना का दौर रहा ।

10. 1977 के मध्य में केन्द्र में और पंजाब सहित कुछ राज्यों में बहुवलीय सरकारों के आगमन से ज्ञानी जैल सिंह को कठिनाईयों, तकलीफों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ा । परन्तु ये विपत्तियां तथा तकलीफें भी उनके उत्साह को नहीं तोड़ पायीं और ना ही वे लोगों के प्यार से बंचित हुए । जनवरी, 1980 में सातवीं लोक सभा के लिए हुए चुनावों में वे भारी बहुमत से पंजाब के होशियारपुर निर्वाचन क्षेत्र से चुने गये तथा श्रीमती गांधी के मंत्रिमंडल में भारत सरकार के गृह मंत्री बने । केन्द्रीय गृह मंत्री के रूप में पेप्सू (पी.ई.पी.एस.यू.) तथा पंजाब में मंत्री, तथा पंजाब के मुख्य मंत्री के रूप में तीन दशकों से भी अधिक लम्बा उनका प्रशासनिक अनुभव उनके काम आया । वे असम के आंदोलनकारी नेताओं को बातचीत के लिए राजी करने में सफल हुए । केन्द्रीय गृह मंत्रालय को पेश आ रही अनेक समस्याओं का समाधान करने में उन्होंने अथक प्रयास किए तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने और सभी तरह की हिंसा को समाप्त करने में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया ।

11. 15 जुलाई, 1982 को उन्हें भारत के राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद के लिए चुना गया तथा उन्हें 25 जुलाई, 1982 को भारत के सातवें राष्ट्रपति के रूप में शपथ दिलायी गयी । उन्होंने भारत के राष्ट्रपति के रूप में अपना कार्यकाल सफलतापूर्वक 24 जुलाई, 1987 को पूरा किया । इस अवधि के दौरान, प्रगति के रास्ते में रुकावट डालने वाली ताकतों को चुनौती के बावजूद वे देश को उन्नति के रास्ते में लाने में सफल हुए । उन्होंने कभी भी अपना संतुलन नहीं खोया । वे हमेशा शांत बने रहे तथा कभी विक्षुब्ध नहीं हुए । उन्हें भारत की एकता तथा अखण्डता सदैव प्रिय थी ।

12. भारत के राष्ट्रपति का पद छोड़ने के बाद भी वे सक्रिय जीवन जीते रहे । वे निरन्तर यात्रा करते रहे,

लोगों से मिलते तथा उनसे बातें करते तथा उन्हें विवेकपूर्ण सलाह देते। उनका व्यक्तिगत जीवन सादसीपूर्ण था। वे विनोदी स्वभाव के सदास्पद व्यक्ति थे। उन्हें बच्चों से बहुत प्यार था। गरीबों तथा दलितों के लिए उनके मन में बहुत अधिक हमदर्दी थी। वे स्वयं अपने भाग्यनियता थे जो देश के लिए, जिए तथा देश के लिए ही अपनी जान दे दी।

के. पद्मनाभय्या, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 25th December, 1994

F. No. 3/8/94-Public:—In the passing away of Giani Zail Singh on 25th December, 1994, India has been deprived of an able Statesman and Parliamentarian, a freedom fighter and a humanist who served the country with great devotion, dedication and distinction.

2. Tall, handsome and immaculately dressed, Giani Zail Singh was a firm believer in democratic traditions, most unassuming, a God fearing man and a true son of the soil. He carved out a distinguished niche for himself in Indian public life.

3. Giani Zail Singh was born on May 5, 1916 in village Sandhwan in Faridkot District in a family of artisans which had taken to agriculture. He came from the common stock and was born in a mud house in a remote village. Stitching clothes, crushing stones, ploughing the fields, laying roads, digging wells and making swords gave Giani a rare insight into the psyche of the common man, his problems and aspirations. Also, as a form of basic education, he studied the Quran, Geeta and Ramayana, besides making an intensive study of the Sikh Scriptures.

4. Displaying precocity from his early childhood, Giani cultivated literary tastes. By the time most of the boys of his age had passed their matriculation examination, he had completed the study of Sikh Religion, Sikh History and Sikh Scriptures. He grew to be a Giani which means a Scholar. He was very well versed in Hindi and Urdu. Though not well-versed in the nuances of the English language, the valuable example which he furnished of the power of self help, of patient purpose, resolute working and steadfast integrity illustrated the efficacy of self-respect and self-reliance in enabling men of even the humblest rank to secure honourable means of livelihood and a solid reputation.

5. The martyrdom of Bhagat Singh and his companions, valiant freedom fighters, on March 23, 1931, moved the young Giani who was then only

16. The story of Giani Zail Singh's ordeals started with the setting up of the branch of the All India Congress in the State of Faridkot in 1938. The Maharaja regarded the opening of the Branch of the Congress as a challenge and the man who did it as an arch enemy. So it was that Giani having founded the Congress in the State of Faridkot found himself behind prison bars for five years. He was kept in solitary confinement throughout his imprisonment. Even after his release, Giani was harassed and he had to spend sometime outside the State. During this period, he canvassed support for the freedom movement in his State. During the same period, he was influenced by Mahatma Gandhi's message of non-violence.

6. In 1946, Giani was back in his State to resume the freedom struggle on the lines initiated by Mahatma Gandhi - Father of the Nation. The whole State of Faridkot rose as one man on the question of hoisting the National Flag. But a reign of terror was unleashed by the Maharaja. Hearing of this high-handedness from Giani and some of his own colleagues, Pandit Jawahar Lal Nehru decided to visit Faridkot to hoist the Tricolour. This brought Giani into close contact with Panditji and since that day Panditji kept a benign eye on the young and promising freedom fighter.

7. Setting up a parallel Government in Faridkot was the most perilous adventure of Giani Zail Singh's struggle for an independent India. Giani Zail Singh was held guilty of leading the revolt against the Raja's Government and taken into custody. When Faridkot State was merged with the State of Patiala and East Punjab States Union, Giani Zail Singh made historic contributions to the establishment of socio-economic justice for farm labourers, small cultivators and tenants in his capacity as the Minister for Revenue and Agriculture. The conferment of proprietary rights on the actual tillers and the abolition of absentee landlordism and the legislative steps ensuring security of tenancy and the rights of tenants to share the lands declared as "surplus" after land ceiling, were all due to the efforts of Giani.

8. In 1956, Giani Zail Singh became a Member of the Rajya Sabha and the Senior Vice-President of the Punjab Pradesh Congress Committee. He struggled selflessly to ensure thumping victories for the Congress in Punjab in the 1962 General Elections to Punjab Vidhan Sabha and the Lok Sabha and was taken as a Minister in the Government headed by the late Sardar Pratap Singh Kairon. During 1962 to 1972, Giani Zail Singh waged an uncompromising battle against the forces of communalism, reaction,

and exploitation in Punjab. As President of the Punjab Pradesh Congress Committee, he was instrumental in achieving a decisive and overwhelming victory for the Congress in the 1971 Lok Sabha Elections and the 1972 Punjab Vidhan Sabha polls.

9. In March, 1972, he was elected unanimously by the Punjab Congress Legislative Party to be the Chief Minister of Punjab. His reign as Chief Minister for more than five years was a period of stability for Punjab. Giani Zail Singh accelerated the pace of the Green Revolution and industrialisation in the State, and strengthened the forces of secularism by promoting unity among people of all faiths. Under his dynamic stewardship Punjab saw prosperity, stability, vitality, unity and solidarity.

10. With the advent of multiparty governments at the Centre and in certain States including Punjab towards the middle of 1977, Giani Zail Singh had to face difficulties, hardships and harassment. The trials and tribulations, however, failed to break his spirit or to deprive him of the love of the people. He was elected to the Seventh Lok Sabha in January, 1980, from the Hoshiarpur Constituency in Punjab with a thumping majority and became the Home Minister in the Government of India in Smt. Indira Gandhi's Cabinet. He brought to the office of the Union Home Minister his vast administrative experience spanning over three decades as Minister in

PEPSU and Punjab and as the Chief Minister of Punjab. He brought the agitating leaders of Assam to the negotiating table. He made tireless efforts to solve the numerous problems facing the Union Home Ministry and contributed significantly to strengthen national integration and curbing violence of all types.

11. He was elected to the highest office of the President of India on 15th July, 1982 and was sworn in as the Seventh President of India on 25th July, 1982. He completed his term as President of India successfully on 24th July, 1987. During this period he was able to lead the country on the path of progress despite challenges from forces obstructing progress. He never lost his poise. He was always calm and serene. The unity and integrity of India was always dear to his heart.

12. After demitting office as the President of India, he continued to lead an active life. He travelled incessantly meeting and talking to people and giving them his sage advice. His personal life was simple and austere. He had a fine sense of humour and was a brilliant conversationalist. He loved children. He had a marvellous sympathy for the poor and the down-trodden. He was a man of destiny who lived and died for his country.

K. PADMANABHAIAH, [Secy.